International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 04, No. 04(II), October - December, 2022, pp. 372-374

स्वराज्य के प्रथम संदेशवाहकः महर्षि दयानन्द सरस्वती (1824 से 1883)

डॉ. महेन्द्रसिंह राजपुरोहित*

प्रस्तावना

स्वराज्य के प्रथम संदेशवाहक महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के महानतम पथ–प्रदर्शक थे। वस्तुतः भारत में राष्ट्रीय चेतना के पुर्नजनन तथा पुनर्जागरण की बेला में तुरन्त तथा तत्काल कार्य की प्रेरणा के वे सर्वाधिक शक्तिशाली स्त्रोत थे।[01]

दयानन्द ने सर्वप्रथम स्वराज्य, स्वदेशी, स्व–भाषा एवं स्व–संस्कृति आदि की भावना का प्रबल समर्थन किया और यह प्रेरणा दी कि अतीत की तरह पुनः भारत को जगत गुरू की भूमिका के लिए तैयार होना चाहिए। उनकी प्रबल आंकाक्षा थी कि भारत एक बार पुनः अपने अतीत के महान् गौरव को प्राप्त करें। और उसे विश्व में एक शक्तिशाली व श्रेष्ठ राष्ट्र का सम्मान प्राप्त हो।

जैसे राजनीति के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज पहले पहल तिलक में प्रत्यक्ष हुआ, वैसे ही संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द में निखरा।[02]

स्वामी दयानन्द ने वेदों को अपने चिन्तन का मूल आधार बनाया किन्तु उनके चिन्तन पर मनुस्मृति, कौटिल्य के अर्थशास्त्र, शुक्रनीति इत्यादि ग्रन्थों का भी स्पश्ट प्रभाव है। दयानन्द ने अपने चिन्तन में भारतीय गौरव एवं भारतीय अस्मिता का उद्घोष करके भारतीय राष्ट्रवाद को वैचारिक संबंल प्रदान किया। उन्होंने वैदों की ओर लौटाते हुए भारतीयता के प्रति गौरव की भावना का संचार किया तथा सामाजिक जीवन में विद्यमान विविध क्रुरीतियों, अंधविश्वासों, लोकाचारों के ढेर का विरोध कर भारतीय समाज को जागरूक बनाने तथा उन्हें एकता के बंधन में बांधने में प्रभावशाली भूमिका निभाई। उन्होंने ऐसे समय में जबकि भारतीय जनता अज्ञान और आत्महीनता के अंधकार में भटक रही थी, उन्होंने वैदिक ज्ञान, भारतीय जीवन दर्शन ओर मूल्यों को पुनप्रतिष्ठित करने का उद्घोष कर जनता में उत्साह का संचार किया।

विदेशी साम्राज्य के अधीन भारतीयों को यह समझाने का प्रयास किया जा रहा था कि उनका कोई गौरव मय अतीक नहीं है तथा पश्चिमी जीवन पद्वति शासन प्रणाली सर्वश्रेष्ठ है। भारतीयता के इस पराभाव के कठिन काल में स्वामी दयानन्द ने वैदों में संचित ज्ञान और दर्शन की सर्वोच्चता का उद्घोष करके भारतीयो में विद्यमान आत्महीनता का प्रतिकार किया। अपने उदार और विवेकशील सामाजिक दर्शन के माध्यम से उन्होने भारतीय धार्मिक ओर सामाजिक जीवन में प्रचलित रूढियों व अंधविश्वासों का दृढ़तापूर्वक खंडन करके सामाजिक जागृति का संदेश प्रसारित किया। दयानन्द ने हिन्दू धर्म में प्रचलित रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध किया तथा वैदिक मान्यताओं, भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया तथा भारतीय जनता में आत्मविश्वास का संचार किया। उनके सामाजिक विचारों में राश्ट्र के प्रति गौरव भावना अभिव्यक्त हुई।

* सह आचार्य – राजनीति विज्ञान, राजकीय बांगड़ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पाली, राजस्थान।

स्वामी दयानन्द सरस्वती को भारत में सामाजिक न्याय के प्रति चेतना का अग्रदूत माना सकता है, भारतीय समाज में स्त्रियों और दलित वर्गो के प्रति प्रचलित अन्याय एवं भेदभाव का उन्होंने दृढ़तापूर्वक विरोध किया। उन्होंने 19वीं शताब्दी में बाल विवाह का विरोध, छुआछूत का विरोध व महिला अधिकारों की वकालत तथा महिलाओं की स्वतंत्रता का समर्थन करके भारत में सामाजिक न्याय एवं क्रांति का उद्घोष किया, हालांकि उन्होने आजादी के आंदोलन में पृथक से भाग नहीं लिया तथापि उनके सामाजिक, धार्मिक व राजनीतिक विचारों में भारतीय राष्ट्रवाद के स्वर प्रखर है। दयानन्द ने शिक्षा के सैद्वांतिक व व्यावहारिक सभी पक्षों का प्रमुखता से प्रतिपादन किया उन्होंने शिक्षा की अनिवार्यता तथा राष्ट्रीय जीवन में उनके महत्व को रेखांकित करते हुए महिला एवं दलितों के भेदभाव को समाप्त करने का आग्रह किया।

स्वामीजी वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति केपुनरूत्थानवाद के प्रबल समर्थक थे। वे समकालीन भारत की जर्जरित हो रही सामाजिक तथा धार्मिक व्यवस्था के स्थान पर वैदिक संस्कृति की शक्तिशाली तथा शुद्व भावना को पुनः जीवित करना चाहते थे। यद्यपि वे वैदिक स्वराज्य के सन्देशवाहक थे परन्तु पारिभाषिक अर्थ में राजनीतिक दार्शनिक नहीं थे। उन्होंने राजनीतिक सिद्वान्त के क्षेत्र में किसी क्रमबद्व ग्रन्थ की रचना नहीं की हैं। किन्तु अपनी रचनाओं में और कभी कभी निजी वार्तालाप के दौरान उन्होंने राजनीतिक विचार व्यक्त किये। उनके सत्यार्थ प्रकाश तथा 'ऋग्वेदादि भाष्य' भूमिका दोनो ही प्रसिद्ध ग्रन्थों में एक एक अध्याय ऐसा हैं जिसमें राजनीतिक विचारों की मीमांसा की गई हैं।[03]

दयानन्द ने भारत के पतन का प्रमुख कारण सामाजिक कुरीतियों की मौजूदगी बताया। उन्होंने पौराणिक सनातनधर्म एवं समाज की रूढ़िगत मान्यताओं – जाति–व्यवस्था, अस्पृश्यता, मूर्तिपूजा, बहुदेववाद, श्राद्ध–तर्पण, शुद्र व स्त्री की उपेक्षा, बाल–विवाह, विधवा–विवाह निषेध इत्यादि का खण्डन करते हुए "कृण्वन्तो विश्वमार्यम'' का सन्देश दिया। उनका यह सन्देश दमन, उत्पीडन और अनुसूदन का सन्देश नहीं हैं। समस्त विश्व में धर्मयुक्त न्यायपूर्ण मैत्री समन्वित व्यवस्था स्थापित हो– यही इसका तात्पर्य हैं। इस प्रकार विदित हैं उनका आध्यात्मिक राष्ट्रवाद मानव समानता और भ्रातृत्व का पोषक हैं।[04] किन्तु उनके अन्तरराष्ट्रवाद में विश्व के राष्ट्रों के राजनीतिक संघ की कोई कल्पना नहीं थी। उनका विश्वबन्धुत्व एक ऐसे उपदेशक और सन्देशवाहक का रोमांटिक अन्तरराष्ट्रवाद था जो उस दिन का स्वप्न देखा करता था जब सम्पूर्ण विश्व वैदिक शिक्षाओं का अनुयायी बन जायेगा। वस्तुतः हमें दयानन्द की शिक्षाओं में 'मानवतावादी –सार्वभौमवाद' के अंश देखने को मिलते हैं।[05] उनके द्वारा सन् 1875 में स्थापित आर्य समाज के छठे, नवे नियम में विशेषतः उनका विश्वबन्धुत्व का आदर्श झलकता हैं। छठे नियम में वर्णित हैं :–

'संसार का उपकार करना इस समाज का प्रमुख ध्येय हैं अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।[06]

इसके अतिरिक्त स्वामी दयानन्द ने हिन्दु धर्म के उत्थान हेतु सकारात्मक प्रयास कर उसके पतन को रोकने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया। इस दृष्टि से वे भारत में हिन्दु पुनरूत्थानवादी आन्दोलन के अग्रज थे।[07]

यह वस्तुतः सत्य हैं कि दयानन्द के व्यक्तित्व तथा शिक्षाओं ने जिस शक्ति तथा उत्साह को उत्पन्न किया उससे हिन्दु एकता आन्दोलन को भारी बल मिला[08] उन्होंने युग–पुरूष के रूप में अवतरित होकर हिन्दु धर्म को आसन्न संकटों से उबारने का भगीरथ प्रयत्न किया।

उनके वैदिक पुनरूत्थानवाद, बुद्विवाद तथा समाज सुधारवाद का मूल्यांकन करते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर लिखते हैं ''आधुनिक भारत के महानतम् पथ निर्माता स्वामी दयानन्द सरस्वती ने देश की पतनावस्था से उत्पन्न पंथों और परिपाटियों की व्याकुल करने वाली उलझनों को साफ करके एक नया मार्ग बना दिया जिस पर चलकर हिन्दु ईश्वरभक्ति और मानव सेवा के सरल तथा विवेकपूर्ण जीवन को प्राप्त कर सकते थे। उन्होंने निर्मल दृष्टि से सत्य का दर्शन करके तथा दृढ़ संकल्प और साहस के साथ हमारे आत्मसम्मान तथा सशक्त बौद्विक जागरण के लिए कार्य किया।[09] निःसन्देह भारतीय समाज और राष्ट्रके उत्थान और सांस्कृतिक

पुनर्जागरण में दयानन्द सरस्वती का महान् योगदान हैं। महर्षि अरविन्द ने लिखा हैं कि वह एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कि अनिश्चित वस्तु स्थिति के साथ अपना अनौपचारिक विलय नहीं कर दिया था, वरन् मनुष्यों और वस्तुओं के ऊपर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ दी''।[10]

सांराशतः स्वामी दयानन्द सरस्वती भारतीय सांस्कृतिक पुर्नजागरण के पुरोधा थे। उनका यह विश्वास था कि भारत को जो अमूल्य धरोहर प्राप्त हुई है उसी के संरक्षण से हम अपना खोया गौरव पुनः प्राप्त कर सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. 'रौमां रोलाः लाइफ ऑफ रामकृष्ण पृ0 157–158 (डॉ0 वी.पी. वर्मा, पूर्णवर्णित, पृ0 36 पर उद्धृत)
2. रामधारीसिंह दिनकर ; पूर्णवर्णित पृ0 559
3. डॉ० वी.पी. वर्मा पूर्णवर्णित पृ0 39
4. उपर्युक्त पृ0 54
5. उपर्युक्त, पृ0 59
6. हर विलास शारदा ; लाइफ ऑफ दयानन्द सरस्वती (अजमेर, परोपकारिणी सभा, 1968 द्वितीय संस्करण) पृ0 438
7. बी. आर. पुरोहित (पूर्णवर्णित) पृ0 11
8. डॉ० वी. पी. वर्मा (पूर्णवर्णित) पृ0 61
9. उपर्युक्त पृ0 40 पर उद्धृत
10. श्री अरविन्दकृत 'बंकिम–तिलक–दयानन्द (लेख संग्रह) पूर्णवर्णित, पृ0 45 इस कृति में स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व–कृतित्व का विशद् विवेचन किया गया हैं। (पृ0 43 से 60 तक)

❖◆❖